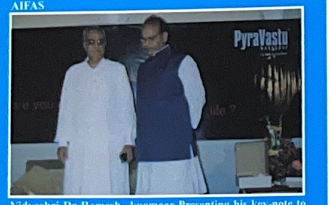

Sri Kumar Babloo is conferred upon Certificate by Shri S.S.Tulsiyan Vice- Chancellor of M. U. Bodh-gaya, Sri Arun Kr. Bansal President AIFAS New Delhi, & others Governors AIFAS

Vidyashri Dr Ramesh kuomaar Presenting his key-note to honorable Prof. Dr Jiten bhatt bio-Energy scientist and founder of the Pyravastu

The Representative of World Astrologer's Society is felicitating Vidayshri Dr. Ramesh Kuomaar in conference, at Kolkata

The secrets of using all the five elements of this universe and their special characteristic and influences such as the magnetic field, gravitational effect etc. of earth, sky, the direction and velocity of the wind, light and heat of the sun. The suitable planning and constructing building dwelling, entertainment, education, prayer, working production and other purposes The Vastu Shastra, evolved scientific methods and system and confined them over the years.

VASTU IS THE LIFE KUNDALI

आज के दिनों में व्यक्ति जहाँ रहता है, वह घर अथवा जहाँ काम करता है, वह जगह, वास्तु के सिद्धान्त के कसौटी पर, अगर जाँचा एवं परखा जाए, तथा घर के अंदर की बनावट को सूक्षमता पूर्वक देखा जाय, तो निःसंदेह वह उसकी वर्तमान की Life Kundali साबित होगी, जिसे देखकर उसके वर्तमान की घट रही घटना खुशी, आमदनी, खर्च, पारीवारीक स्थिति का ब्यौरा स्पष्ट रूप से बताया जा सकता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, चूँकि वास्तु Astro science की ही उत्पत्ति है।

अतःविद्वत वास्तु expert तथा knowledgeable astrologer इमानदारी पूर्वक उपरोक्त स्थित ब्यौरे को बहुत ही सुगमता से स्पष्ट कर सकते हैं।

इसलिए Vastu known as the life kundly of those who are living and working in its jurisdiction whether its residential house or flat / shop and shopping mall / office/ educational institution/ work-shop and industry / bank & financial institution / any administrative office & offices/ Judicial court / hospital, maternity home , or any life saving place / temple & religious place / meditation centre / Hotel / Restaurants, Resorts / Beer & Bar, Banquet Halls / Pertol Pump / Dairy Plant etc.

उपरोक्त भवनों का निर्माण एवं उसकी संरचना सृष्टि के पंचभूतात्मक सिद्धान्त अर्थात पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि इन पाँच तत्वों के समानुपातिक सम्मिश्रण mean five planets from mars to Saturn i.e. Five elements पर ही आधारित है, इसके सही सम्मिश्रण से Bio-electric magnetic energy की उत्पत्ति होती है जिससे वहाँ निवास करने वाले अथवा कार्य करने वाले व्यक्ति एवं व्यक्तियों को उत्तम स्वास्थय, धन, ज्ञान, सुख एवं एश्वर्य की प्राप्ति होती है तथा व्यक्ति विकास की ओर बढ़ता ही जाता है।

Sun और moon इस पृथ्वी पर माँ एवं पिता रूपी क्रियाशील हैं, Learned Prof. Dr. Jiten Bhatt अपनी लिखें पुस्तकों में इस Fa और Maa को स्वीकार कर पिरामिड एवं पिरामिड–यंत्र का निर्माण कर विस्तार से इसके अंतर्गत होने वाले efficiency और influences को वर्णन किया है।

हमारे पौराणिक शास्त्र भी स्पष्ट करते हैं कि दस महा–विद्या में शिव और पार्वती एक महा–विद्या है, माँ पार्वती को अर्धशक्ति कहा है और शिव के साथ मिलकर पूर्ण शक्ति का विस्तारक माना है।

इसका दूसरा ज्वलंत उदाहरण है कि अर्ध शक्ति पार्वती शिव से आलिंगन कर अर्थात माता अपनी शक्ति–कुंज में पिता के शक्ति–रस को सम्मोहित कर गर्भादान में प्रवाह करने पर बेबस कर देती है, और इस क्रिया से पिता के शक्ति–रस को ग्रहण कर पूर्णता को प्राप्त करते हुए सृष्टि की नई शक्ति रूपी रचना को गर्भादान में रोपित कर सृष्टि के निर्माण की क्रिया को आग्रसारित करती है।

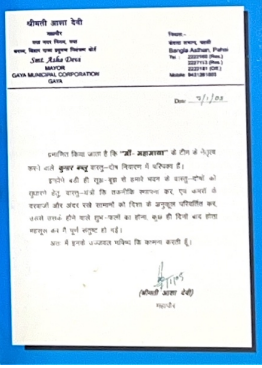

Prof. Dr Jiten Bhatt Bio Energy Scientist & Founder of the pyravastu Conferring Degree of pryavastu- expert to Shri Kumar Babloo, at Baroda

Prof .Dr Jitin Bhatt Together With Kumar Babloo Who being the shadow of his other side

Prof. Dr. G. Trivedi Vice-Chanceller R. Agricultural University, Patna & Dr. N. Jha discussing at the dias in Conference

श्रीमती आशा देवी

Smt. Asha Devi

MAYOR

GAYA MUNICIPAL CORPORATION

GAYA

Bangla Asthan, Pahsi

Date: 7/1/05

प्रमाणित किया जाता है कि "माँ- महामाया" के टीम के नेतृत्व करने वाले कुमार बब्लू वास्तु–दोष निवारण में परिपक्व हैं।

इन्होंने बड़ी ही सूझ-बूझ से हमारे भवन के वास्तु–दोषों को सुधारने हेतु, वास्तु–यंत्रों कि तकनीकि स्थापना कर, एवं कमरों के दरवाजों और अंदर रखे सामानों को दिशा के अनुकूल परिवर्तित कर, उससे उत्पन्न होने वाले शुभ-फलों का होना, कुछ ही दिनों बाद होता महसूस कर मैं पूर्ण संतुष्ट हो गई।

अतः मैं इनके उज्जवल भविष्य कि कामना करती हूँ।

(श्रीमती आशा देवी)

महापौर

अतः मानव के इस गृहस्थ आश्रम में शिव और पार्वती, पृथ्वी के दस महा–विद्याओं में, सशक्त एक महा–विद्या कहलाती है।

मानव शरीर का मुख्य organ मस्तिष्क है जो Research, Investigation and order section कहलाता है, इस मस्तिष्क के अंदर दो गोलार्ध unit हैं, एक Right तो दूसरा left, मस्तिष्क के Right गोलार्ध unit मानव शरीर के female side अर्थात left के शरीर organ पर नियंत्रण करती है, तथा मस्तिष्क के left गोलार्ध unit मानव शरीर के male side अर्थात Right के शरीर organ पर नियंत्रण करती है।

इसी प्रकार male से related fillings matter एवं material को female अर्थात left मस्तिष्क गोलार्ध accelerate तथा नियंतत्रण करती है तथा female से related filling soft awareness imagination matter एंव material को male अर्थात Right मस्तिष्क गोलार्ध accelerate तथा नियंत्रण करती है। अतः स्पष्ट हो जाता है कि संसार की जितनी भी जीव उत्पत्ति है उन पर male एवं female अर्थात दोनों का एक दूसरे नियंत्रण एवं प्रभाव बने रहना स्वाभाविक है।

व्यक्ति के व्यवस्थित स्थान, अथवा नये निर्माण के पूर्व, स्थान के निरीक्षण के उपरांत ही, यह जाना जा सकता है कि, इस स्थान पर कौन सा क्षेत्र कमज़ोर है, तथा पर्याप्त रूप से कितनी मात्रा में elements उर्जा एकत्रित हो रहा है, उसके विस्तार की गति क्या हो सकती है तथा कौन–कौन सा क्षेत्र है, जहाँ elements उर्जा की मात्रा पर्याप्त से, अधिक मात्रा में हो रहा है, अर्थात overflow किस–किस क्षेत्र को लाभप्रद अथवा नुकसान कर रहा है, इसका पूर्ण जायजा लेने के बाद ही, निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि, आगे की योजना किस तरह क्रमबद्ध की जाए, ताकि उपरोक्त व्यक्ति तथा उसमें साथ रह रहे अन्य परिवारों को स्थल उत्पन्न परेशानियों से छुटकारा दिलाया जा सके।

Commercial Industrial, Research Institution, Dairy, Hospital and Maternity Home, etc. में भी वास्तु के पंचभूतात्मक सिद्धांत को ही लिया जाता है।

परंतु, इसके व्यवस्थापन में व्यक्ति, व्यक्ति–विशेष, Partners, managing director, members of management committes, private Ltd., Public Ltd. एवं उनके अधिनस्थ कार्यरत– Manager or Managers, Labours, Supervisors, Row-Materials suppliers, Bankers, Financiers, Marketing Executor, Distributors, Exhibitors, Transporters, Brokers and Representative etc.

यहाँ उपरोक्त सभी के हितों को ध्यान में रखकर वास्तु के मूल तथा सहः सिद्धांतों के अनुकूल ही व्यवस्थित किया जाता है, ताकि इससे जुड़े सबों के हितों की रक्षा हो सके।